Result Mitra Daily Magazine

गुरु तेग बहादुर

➢ हालिया संदर्भ :

- 24 नवंबर को प्रतिवर्ष सिखों के नवें गुरु गुरु तेग बहादुर के शहीद होने के दिवस के रूप में 'शहीदी दिवस' मनाया जाता है।
- वर्ष 1675 में इसी दिन औरंगजेब के आदेश से गुरु की दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में हत्या कर दी गई थी, जहां अब गुरुद्वारा सीसगंज साहिब है।

➢ गुरु तेग बहादुर :

- इनका जन्म 21 अप्रैल 1621 को अमृतसर में माता नानकी एवं गुरु हरगोविंद के घर हुआ था।
- हरगोविंद सिखों के छठे गुरु थे एवं उन्होंने मुगलों के खिलाफ एक बड़ी सेना खड़ी कर 'योद्धा–संतों' की अवधारणा पेश की।
- तपस्वी स्वभाव के कारण बचपन में इन्हें 'त्याग–मल' कहा जाता था।
- इन्होंने गुरुमुखी, हिंदी, संस्कृत और भारतीय दर्शन का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया तथा तलवारबाजी, तीरंदाजी एवं घुड़सवारी का प्रशिक्षण लिया।
- 1632 में इनकी शादी करतारपुर में माता गुजरी से हुई, जिसके बाद वे अमृतसर चले गए।

➢ गुरु–पद :

- सिखों के चौथे गुरु रामदास के बाद गुरु–पद वंशानुगत हो गया था।
- गुरु तेग बहादुर के बड़े भाई की मृत्यु युवावस्था में ही हो गई, जिसके बाद गुरु–पद उनके बेटे हरराय को 1644 में प्राप्त हुआ और वे मृत्यु तक इस पद पर बने रहे।
- गुरु हरराय के बाद उनके 5 वर्षीय पुत्र गुरु हरकृष्ण ने पद संभाला लेकिन उनकी मृत्यु 8 वर्ष में ही हो गई और उन्होंने अगले गुरु–पद के लिए तेग बहादुर का नाम लिया।

➢ उपदेश :

- गुरु–पद काल में औरंगजेब का शासन था और उस समय सरकारी आदेश के द्वारा जबरदस्ती धर्मांतरण करवाया जाता था।
- जब किसी व्यक्ति को गलत अपराध का आरोपी बनाया जाता था, तो मुस्लिम धर्म में धर्मांतरित होने पर उसके गुनाह माफ कर दिया जाता था।
- गुरु ने पीरों एवं फकीरों की कब्रों को पूजने की परंपरा का विरोध किया एवं अपने अनुयायियों को 'निरभौं' (निडर) एवं 'निरवैर'(ईर्ष्या रहित) बनने का उपदेश दिया।
- उन्होंने 'सदुखरी' एवं ब्रज भाषाओं में उपदेश दिए, जो सिंध से बंगाल तक प्रसिद्ध हुए।
- इनके द्वारा प्रयोग किए गए 'रूपक' पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय हुए।

➢ मुगलों के साथ टकराव :

- जब गुरु की लोकप्रियता बढ़ने लगी, तो एक स्थानीय सरकार ने उन्हें राजस्व एकत्र करने के झूठे आरोप में गिरफ्तार करवा कर दिल्ली भिजवा दिया, लेकिन आमेर के राजा राम सिंह के हस्तक्षेप से यह बात साबित हुई कि गुरु की कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है।
- राजा जयसिंह ने गुरु के दिल्ली यात्रा के दौरान आराम करने के लिए एक धर्मशाला बनवाया था, जो वर्तमान में बंगला साहिब गुरुद्वारा नाम से प्रसिद्ध है।

➢ यात्रा–जीवन :

- गुरु ने आनंदपुर साहिब में अपना मुख्यालय स्थापित किया, जिसके बाद उन्होंने ढाका, पूरी एवं ओडिशा में 4 वर्ष बिताए।
- इन्होंने मथुरा, बनारस, आगरा, प्रयागराज एवं पटना का भी दौरा किया।
- उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी को पटना में स्थानीय भक्तों के संरक्षण में छोड़ दिया, जहां दसवें गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म 1666 में हुआ।

- गुरु ने राजा राम सिंह एवं अहोम राजा के साथ शांति समझौता करवाया था, जिसके याद में ब्रह्मपुत्र के तट पर धुबरी साहिब गुरुद्वारा बनवाया गया।

➢ शहादत :

- यात्रा पूरी करने के बाद जब गुरु आनंदपुर साहिब वापस आए तो उनके पास कृपा दास नामक एक कश्मीरी ब्राह्मण धर्मांतरित होने से बचाने की मांग के साथ आया।
- गुरु ने दास को सुरक्षा का आश्वासन देते हुए कहा कि वे मुगलों से कहें कि पहले उनका धर्मांतरण करवायें।
- औरंगजेब ने इसे खुली चुनौती माना एवं गुरु को गिरफ्तार कर इस्लाम अपनाने के लिए कहा।
- धर्मांतरित होने से इनकार करने पर उन्हें चांदनी चौक में उनके 3 भाइयों मति दास, सती दास एवं भाई दयाला जी के साथ सिर–कलम कर दिया गया।

TM
Result Mitra